



Published by:

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

- 1. For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
- 2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.
- 3. These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.
- In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.
- 5. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
- 6. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
- 7. The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.
- 8. All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.
- 9. All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

<u>Content</u>

छायावाद

Question Paper—June-2023 (Solved)	1-2
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved)	1
Sample Question Paper–1 (Solved)	1
Sample Question Paper–2 (Solved)	1

Page

Chapterwise Reference Book

S.No.

 1. छायावाद : स्वरूप और विकास
 1

 2. जयशंकर प्रसाद और उनकी कविता
 20

 3. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और उनकी कविता
 34

 4. सुमित्रानंदन पंत और उनकी कविता
 46

 5. महादेवी वर्मा और उनकी कविता
 60

 6. काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'चिंता' सर्ग (भाग-1) छंद 1 से 40
 75

 6a. काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'चिंता' सर्ग (भाग-2) छंद 41 से 80
 90

 7. काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'जांसू' का अंश
 103

 8. काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'जुही की कली' और 'संध्या सुंदरी'
 111

 9. काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'जांगो फिर एक बार'
 31

 9. काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'जांगो फिर एक बार'
 31

S.No	. Chapterwise Reference Book	Page
10.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'मोह' और 'नौका विहार'	. 129
11.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'भारतमाता'	138
12.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' और 'बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ'	143
13.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'जाग तुझको दूर जाना' एवं 'विरह का जलजात जीवन'	. 151



www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

छायावाद

B.H.D.E.-144

समय : 3 घण्टे	। अधिकतम अंक : 100
नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य	
प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं तीन की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए– (क) ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व-वन की व्याली, ज्वालामुखी स्फोट के भीषण, प्रथम कंप-सी मतवाली। हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खल-रेखा! हरी-भरी-सी दौड़-धूप, ओ जल-माया की चल-रेखा! उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-78, 'व्याख्या-6' (ख) वह हँसी बहुत कुछ कहती थी, फिर भी अपने में रहती थी,	विस्फारित नयनों से निश्चल कुछ खोज रहे चल तारक दल ज्योतित कर नभ का अन्तस्तल; जिनके लघु दीपों को चंचल, अंचल की ओट किये अविरल फिरतीं लहरें लुक-छिप पल-पल! उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-10, पृष्ठ-131, 'व्याख्या-3' प्रश्न 2. 'छाया की शक्ति और सीमा' विषय पर एक निबंध लिखिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-6, 'छायावाद का महत्त्व :
सबकी सुनती थी, सहती थी, देती थी सबके दाँव, बंधु! उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-124, 'व्याख्या-1' (ग) दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन अधरों में चिर नीरव रोदन, युग-युग के तम से विषण्ण मन, वह अपने घर में प्रवासिनी! उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-138, 'व्याख्या-1' (घ) अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले, या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले, आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया, जागकर विद्युत शिखाओं में निठुर तूफान बोले! पर तुझे है नाश-पथ पर चिह्न अपने छोड़ आना! जाग तुझको दूर जाना! उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-13, पृष्ठ-151, 'व्याख्या-1' (ङ) नौका से उठतीं जल-हलोर, हिल पडते नभ के ओर-छोर!	शक्ति और सीमाएं' प्रशन 3. जयशंकर प्रसाद के शिल्प-विधान की संक्षिप्त चर्चा कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-23, 'प्रसाद काव्य : शिल्प-विधान' प्रशन 4. हिंदी कविता के इतिहास में 'निराला' के महत्त्व को रेखांकित कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-34, 'परिचय', 'निराला : जीवन और व्यक्तित्व', पृष्ठ-39, प्रश्न 4, पृष्ठ-40, प्रश्न 6 प्रशन 5. पंत की काव्य-चेतना के विकास के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-47, 'काव्य-चेतना का विकास' प्रशन 6. महादेवी वर्मा का परिचय देते हुए यह स्पष्ट कीजिए कि उनके काव्य में वेदनानुभूति किस प्रकार अभिव्यक्तित हुई है? उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-60, 'महादेवी वर्मा : जीवन-वृत्त', पृष्ठ-65, प्रश्न 4

www.neerajbooks.com

2 / NEERAJ : छायावाद (JUNE-2023)

प्रश्न 7. 'आँसू' के चयनित अंशों का विवेचन और विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-103, 'परिचय', पृष्ठ-106, प्रश्न 2

प्रश्न 8. 'संध्या सुंदरी' कविता का विश्लेषण करते हुए इसका महत्त्व भी बताइए।

उत्तर-'संध्या सुन्दरी' निराला की एक प्रसिद्ध कविता है। इसका प्रकाशन साप्ताहिक पत्रिका 'मतवाला' में हुआ था। बाद में यह कविता 'परिमल' (1929) में संकलित हुई। इस कविता में निराला ने शाम की सुंदरता का वर्णन किया है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसमें शाम को एक सुन्दरी के रूपक में ढाला गया है। प्रकृति में मनुष्य को देखने की प्रवृत्ति-छायावाद की मुख्य विशेषता है।

इसे भी देखें–संदर्भ–अध्याय-8, पृष्ठ-117, प्रश्न 3, पृष्ठ-120, प्रश्न 5, प्रश्न 6 एवं प्रश्न 7

प्रश्न 9. जयशंकर प्रसाद के काव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना और मानवीयता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-26, प्रश्न 9

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com





छायावाद : स्वरूप और विकास

परिचय

द्विवेदी युग के अंतिम चरण में स्वच्छंदतावाद की धारा वेगवती होती चली गई थी। हालांकि स्वच्छंदतावाद की चर्चा श्रीधर पाठक की रचनाओं के संदर्भ में होने लगी थी, किंतु मुकुटधर पांडेय, मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद और पंत ने भी अपनी कविता में यत्र-तत्र नए भाव और नवीन अभिव्यंजना शैली को स्थान देना प्रारंभ कर दिया था।

यह स्वच्छंद नूतन पद्धति अपना रास्ता निकाल ही रही थी कि रवींद्रनाथ की रहस्यात्मक कविताओं की धूम हुई और कई कवि एक साथ रहस्यवाद और प्रतीकवाद अथवा चित्रभाषावाद को ही एकांत ध्येय बनाकर चल पड़े। चित्रभाषा अथवा अभिव्यंजना पद्धति पर ही जब लक्ष्य टिक गया, तब उसके प्रदर्शन के लिए लौकिक अथवा अलौकिक प्रेम का क्षेत्र ही पर्याप्त समझा गया। इस बंधे हुए क्षेत्र के भीतर चलने वाले काव्य ने छायावाद का नाम ग्रहण किया। जबलपुर से प्रकाशित 'श्री शारदा' पत्रिका में मुकुटधर पांडेय की एक लेखमाला 'हिंदी में छायावाद' शीर्षक से निकलीं, यहीं से आधिकारिक तौर पर छायावाद की विशेषताओं का उद्घाटन हुआ। आचार्य शुक्ल ने अपने इतिहास में सन् 1918 से तीर्थ उत्थान का

आरम्भ माना है, किन्तु उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि छायावादी ढंग की कविताओं का चलन तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में सन् 1910 से ही हो गया था। श्रीपाल सिंह क्षेम ने जयशंकर प्रसाद को छायावाद का प्रवर्तक घोषित किया है। परिणामस्वरूप सन् 1909 में 'इन्दु' के प्रकाशन की बात कही है, जिसमें 'चित्राधार', 'कानन कुसुम', 'झरना' आदि छप चुकी थीं।

अध्याय का विहंगावलोकन

छायावाद की पृष्ठभूमि

द्विवेदी युग के अंतिम पड़ाव में हिंदी साहित्य में जिस काव्य-प्रवृत्ति का प्रचलन हुआ उसे आगे चलकर 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया गया। द्विवेदी युग में ब्रिटिश शासन का

मुखौटा उतर चुका था। अब लोगों को वास्तविकता का ज्ञान था। अब भारतीय जनमानस परतंत्रता की इन बेडियों को तोड़कर स्वाधीनता के खुले आकाश में श्वास लेना चाहता था, किन्तु अंग्रेजों की दमनकारी नीति के कारण ऐसा हो पाना संभव नहीं दिख रहा था। इस राजनीतिक परिदूश्य में 1915-16 के लगभग गांधी जी का भारतीय राजनीति में प्रवेश हुआ। उन्होंने आन्दोलन की बागडोर को संभाला। अब देश की युवा पीढी इस आन्दोलन में सीधे भागीदारी के लिए तैयार थी। असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार हो गई थी। ऐसे में भारत के जन-जन में उत्साह की आवश्यकता थी, जिससे सभी एकजुट हो आंदोलन को सफल बनाने में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर सकें। एक ओर भारत अकाल और महाभारी की मार सह रहा था तो दूसरी ओर अंग्रेजों के दमन का चक्र चलता ही जा रहा था. जिसका परिणाम जलियांवाला बाग काण्ड था। चारों ओर मृत्यु का सन्नाटा था। एक भय था जिसे दुर कर आशा की किरण का नया संचार करना आवश्यक था, जिसका दायित्व तद्युगीन प्रबुद्ध वर्गों पर था। महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, लोकमान्य तिलक, गोपालकृष्ण गोखले व सुभाषचन्द्र बोस आदि ने जहाँ अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया, वहीं साहित्य के क्षेत्र में तद्युगीन कवि-लेखक भी आगे आये।

युगीन परिस्थितियाँ

छायावादी काव्य का लेखन जिस युग में प्रारंभ हुआ वह युग पराधीनता का युग था। श्वेतों की संस्कृति के अधिभार को उतार फेंकने के लिए बहुत से कवि, दार्शनिक, लेखक, नेतागण अपनी भूमिकाओं का निर्वाह कर रहे थे। जनजागरण का कार्य प्रगति पर था, किन्तु अंग्रेजों की दमनकारी नीति जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के रूप में अब भी जारी थी। अकाल व महामारियों ने मनुष्य जीवन को त्रस्त कर रखा था। इसी पृष्ठभूमि में छायावादी कवियों ने भी समाजिक एवं सांस्कृतिक जागरण का बीडा़ उठाकर साहित्य के क्षेत्र में अपना कदम रखा। उन्होंने जनमानस को व्यक्ति स्वातंत्र्य के महत्त्व को समझाने का कार्य करने के साथ-साथ भविष्य के स्वर्णिम स्वप्न भी लोगों को दिखाए।

साहित्यिक परिवेश

नवीन शिक्षा पद्धति, अंग्रेजी के प्रभाव और अंग्रेजी से प्रभावित बांगला साहित्य के संपर्क ने व्यक्तिवादी भावना को जगाया, जिससे व्यक्ति का अहं उद्दीप्त हो उठा, जो कुछ भी इस उदित अहं के विरोध में आया, उसे अस्वीकार करने की, उसका विरोध का प्रयास किया गया, इसलिए एक ओर तो इस युग के काव्य में द्विवेदीयुगीन नैतिकता और स्थूल की प्रतिक्रिया दिखाई देती है और दूसरी ओर विदेशी दासता के प्रति विद्रोह का स्वर सुनाई देता है।

उदाहरणार्थ, राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के कवियों ने विदेशी शासन का विरोध किया और जनता में आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न की। यह विद्रोह छायावादी कवियों में भी व्यापक रूप में दिखाई देता है। उन्होंने विषय, भाव, भाषा, छंद आदि सभी क्षेत्रों में नए मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रयास किया। सभी छायावादी कवियों की आरंभिक रचनाओं में निराशा और कुंठा का स्वर दिखाई देता है।

छायावाद का प्रारम्भ

छायावाद का प्रारंभ कब हुआ? इस प्रश्न का आज भी उपयुक्त उत्तर नहीं दिया जा सकता। वस्तुत: कोई भी युग अथवा प्रवृत्ति न तो एकाएक प्रारंभ ही होती है और न ही एकाएक समाप्त। द्विवेदी युग के अंतिम चरण में एक क्षीण धारा के रूप में ही इसका समारंभ हुआ होगा। धीरे-धीरे जब यह धारा बलवती हुई तो द्विवेदीयुगीन धारा निष्प्रभावी एवं क्षीण होकर समाप्त हो गई और मुख्य धारा के रूप में 'छायावाद' की काव्य धारा प्रवाहित होने लग गई।

'छायावाद' शब्द का प्रयोग

हिंदी की कुछ पत्रिकाओं-'श्रीशारदा' और 'सरस्वती' में क्रमशः सन 1920 और 1921 में मुकुटधर पांडेय और सुशील द्वारा दो लेख 'हिंदी में छायावाद' शीर्षक से प्रकाशित हुए थे। अतः कहा जा सकता है कि इस नाम का प्रयोग सन 1920 से अथवा उससे पूर्व से होने लग गया था। संभव है कि मुकुटधर पांडेय ने ही इनका सर्वप्रथम आविष्कार किया हो। यह भी ध्यान रहे कि पांडेय जी ने इसका प्रयोग व्यंग्यात्मक रूप में छायावादी काव्य की अस्पष्टता (छाया) के लिए किया था, किंतु आगे चलकर वही नाम स्वीकृत हो गया। स्वयं छायावादी कवियों ने इस विशेषण को बड़े प्रेम से स्वीकार किया है।

अर्थ विस्तार तथा व्यापकता

'छायावाद' शब्द का अर्थ इतना विस्तृत एवं व्यापक है कि इन्हें कुछ शब्दों की सीमा में बाँधा नहीं जा सकता। इसमें जहाँ प्रेम, सौन्दर्य, वेदना, प्रकृति-चित्रण, अवसाद व भावों का प्रवाह है, वहीं दर्शन, रहस्य, करुणा व शिल्प के मौलिक रूप भी प्रसाद, निराला, पंत व महादेवी जैसे प्रमुख कवि इस युग के सूत्रधार हैं, तो जनार्दन झा 'द्विज', मुकुटधर पाण्डेय, हरिकृष्ण प्रेमी, दिनकर, इलाचंद्र जोशी, जानकीवल्लभ शास्त्री आदि जैसे गौण छायावादी कवि इसके सिपाही थे। जहाँ अनेक अर्थ संप्रेषित करने वाले इस काव्य को व्यक्ति स्वाधीनता का गीत कहा गया, तो वहीं इसे सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना को मौलिक अभिव्यक्ति देने वाला काव्य कहा गया। इस प्रकार, छायावादी काव्य की भावभूमि अत्यंत ही विस्तुत एवं व्यापक है।

छायावाद के प्रमुख कवि प्रवर्तक कवि जयशंकर प्रसाद

छायावादी युग के प्रवर्तक कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी में सुंघनी साहू नाम से प्रचलित एक वैश्य परिवार में 30 जनवरी सन 1889 में हुआ था। प्रसाद जी ने फारसी, हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी एवं उर्दू शिक्षा की प्राप्ति घरेलू स्तर पर ही की थी। वेद, पुराण, साहित्य एवं दर्शन का ज्ञान प्रसाद जी ने स्वाध्याय से ही प्राप्त किया था। आपमें काव्य सूजन के गुण बाल्यकाल से ही निहित थे। प्रसाद जी का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा वाला है, वह एक कुशल कहानीकार, निबंधकार, नाटककार एवं उपन्यासकार होने के साथ-साथ कवित्व गुणों के धनी व्यक्ति थे। हिंदी साहित्य से प्रसाद जी के नाम को अलग कर पाना असंभव है। हिंदी साहित्य के लिए आपकी उपलब्धि एक युगांतकारी घटना है। युग प्रवर्तक साहित्यकार प्रसाद ने काव्य एवं गद्य दोनों ही विधाओं में रचनाएं करके हिंदी जगत को सशक्त एवं प्रभावशाली पत्र प्रदान किया है। इसके साथ ही उन्होंने महाकाव्यों की रचना करके आधुनिक काल में भी अपना अग्रिम स्थान ग्रहण किया है हिंदी साहित्य में जयशंकर प्रसाद का नाम सर्वोपरि है।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 11 फरवरी 1896 को बंगाल के मेदनीपुर नामक जिले में वसंत पंचमी के दिन हुआ था। सूर्यकान्त जी महाकवि जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत एवं महादेवी वर्मा के साथ हिंदी काव्य संसार में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। आपके जीवन का अंतिम समय इलाहाबाद में बीता। निराला जी की रचनाओं में अनेक प्रकार के भाव पाए जाते हैं। यद्यपि वे प्राय: खड़ी बोली के कवि थे, परन्तु वे ब्रजभाषा एवं अवधी भाषा में भी कविताएँ गढ़ लेते थे। आपकी रचनाओं में कहीं प्रेम की सघनता है, कहीं आध्यात्मिकता तो कहीं विपन्नों के प्रति सहानुभूति व संवेदना, कहीं देश-प्रेम का जज्बा, तो कहीं सामाजिक रूढ़ियों का विरोध, तो कहीं प्रकृति के प्रति झलकता अनुराग। आपकी प्रमुख काव्यकृतियाँ अग्रलिखित हैं–

कविता संग्रह–परिमल, अनामिका, गीतिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अर्चना, आराधना, तुलसीदास, जन्मभूमि।

उपन्यास–अप्सरा, अल्का, प्रभावती, निरूपमा, चमेली, उच्छश्रुंखलता, काले कारनामे।

निबन्ध संग्रह—प्रबन्ध-परिचय, प्रबन्ध प्रतिभा, बंगभाषा का उच्चारण, प्रबन्ध पद्य, प्रबन्ध प्रतिमा, चाबुक, चयन, संघर्ष।

अनुवाद–आनन्द मठ, विश्व-विकर्ष, कपाल कुण्डला, दुर्गेश नन्दिनी, राज सिंह, राज रानी, देवी चौधरानी, युगलंगुलिया, चन्द्रशेखर, रजनी, श्री रामकृष्ण वचनामृत, भारत में विवेकानन्द, राजयोग।

सुमित्रानन्दन पंत

प्रकृति के सुरम्य गोद में कवि सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई, सन् 1900 को अल्मोड़ा के निकट कौसानी नामक एक छोटे से ग्राम में हुआ था। पंत जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में ही प्राप्ति की। अध्ययन में आपकी रुचि निरंतर बनी रही और आपने स्वाध्याय से ही संस्कृत, बांग्ला, हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। इलाहाबाद को प्रकृति की गोद भी कहा जाता है और इसी गोद में पलने के कारण आपने अपनी सुकुमार भावना की प्रकृति को अपनी काव्य रचनाओं में व्यक्त किया। आपने 'रूपाभ' पत्रिका का प्रकाशन किया। यह पत्रिका प्रगतिशील विचारों पर आधारित थी। इसके अतिरिक्त आपने 'भारत छोड़ो आंदोलन' से प्रेरित होकर सन् 1942 में 'लोकायन' नामक संस्कृति पीठ की स्थापना की और तत्पश्चात् भारत भ्रमण हेतु निकल पड़े।

अनन्य प्रकृति प्रेमी तथा विदग्ध–विचारक कवि पंत ने बाल्यावस्था से ही काव्य-सृजन प्रारम्भ कर दिया था। कवि रूप में स्थापित इस महान व्यक्तित्व ने काव्य से इतर नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध संस्मरण तथा समीक्षा के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया, किन्तु मूलतः वे कवि ही थे और अपनी विशिष्ट पहचान भी इसी क्षेत्र में बना सके। समय-समय पर गांधी. मार्क्स तथा अरविन्द आदि से प्रभावित और प्रेरित होने वाले इस प्रकृति-प्रेमी कवि की आरम्भिक रचनाएं 'वीणा' में संकलित हैं। इसके अतिरिक्त अन्य काव्य कृतियों में 'ग्रन्थि', 'पल्लव', 'गुंजन', 'युगान्त', 'ज्योत्स्ना', 'अंतिमा', 'ग्राम्या', 'युगवाणी', 'युगान्तर', 'स्वर्ण–किरण', 'स्वर्ण–धूलि', 'उत्तरा', 'रजत शिखर' 'शिल्पी', 'लोकायतन', 'कला और बूढ़ा चाँद', 'किरण', 'पौ फटने से पहले', 'गीतहंस', 'समाधिता', 'आस्था' तथा 'सत्यकाम' आदि चिरस्मरणीय हैं। प्रकृति चित्रण का हृदयग्राही चित्रण और उसमें भी कोमल पक्ष विशेष रूप से कवि की रुचि का वैशिष्ट्य है।

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा का उनका जन्म 26 मार्च 1907 में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद नामक शहर में हुआ था। उनकी माता का नाम हेमरानी था, जोकि एक कवयित्री थी एवं श्रीकृष्ण में अटूट श्रद्धा रखती थी। महादेवी वर्मा जी नाना जी को भी ब्रज भाषा में कविता करने की रची थी और नाना एवं माता के इन्हीं गुणों का गहरा प्रभाव महादेवी पर भी पडा।

रहस्य, वेदना और गीतात्मकता की अमर-सृजक महादेवी वर्मा को काव्य ही नहीं, रेखाचित्र, संस्मरण, निबन्ध तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले महादेवी वर्मा के बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व ने 'वेदना' के मर्म से जो तादाकार किया और कराया है, वह निश्चित ही उनका अपना वैशिष्ट्य है। सन् 1930 ई. में उन्होंने 'नीहार' नामक काव्य संकलन प्रदान किया और उनकी प्रतिभा की धूम पूरे भारत में मच गई। इसके बाद लगातार सन् 1934 ई. में 'नीरजा', सन् 1936 में 'सांध्यगीत' तथा सन् 1940 ई. में 'दीपशिखा' जैसी कृतियों में गीतों के माध्यम से आध्यात्मिक-वेदना और रहस्य-चेतना को मुखर बना दिया। हिंदी साहित्य में आधुनिक मीरा के नाम से भी जानी जाती हैं।

छायावाद की अन्तर्वस्तु

लम्बे विचार-विमर्श के बाद आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि छायावाद न रहस्यवाद है, न केवल शैली और न ही केवल स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह या आग्रह। इन सब परिभाषाओं में उसकी एक प्रमुख विशेषता की ओर संकेत तो मिलता है, पर उसकी समग्रता परिभाषित नहीं होती। छायावाद इनमें संकेतित हर विशेषता से कुछ अधिक है। एक अरसे से शुक्लोत्तर आलोचक इस 'कुछ' को पारिभाषित करने का प्रयास करते आ रहे हैं।

व्यक्ति-स्वातंत्र्य का स्वर

छायावादी काव्य में वैयक्तिकता का प्राधान्य है। कविता वैयक्तिक चिंतन और अनुभूति की परिधि में सीमित होने के कारण अंतर्मुखी हो गई, कवि के अहम् भाव में निबद्ध हो गई। कवियों ने काव्य में अपने सुख-दु:ख, उतार-चढ़ाव, आशा-निराशा की अभिव्यक्ति खुलकर की। उसने समग्र वस्तुजगत को अपनी भावनाओं में रंगकर देखा। जयशंकर प्रसाद का 'आंसू' तथा सुमित्रानंदन पंत के 'उच्छवास' और 'आंसू' व्यक्तिवादी अभिव्यक्ति के सुंदर निदर्शन हैं। इसके व्यक्तिवाद के स्व में सर्व सन्निहित है। डॉ. शिवदान सिंह चौहान इस संबंध में अत्यंत मार्मिक शब्दों में लिखते हैं-छायावादी कवियों की भावनाएं यदि उनके विशिष्ट वैयक्तिक दु:खों के रोने-धोने तक ही सीमित रहती, उनके भाव यदि केवल आत्मकेंद्रित ही होते तो उनमें इतनी व्यापक प्रेषणीयता कदापि न आ पाती। निराला ने लिखा है–

"मैंने मैं शैली अपनाई, देखा एक दुःखी निज भाई दुख की छाया पड़ी हृदय में झट उमड़ वेदना आई।"

इससे स्पष्ट है कि व्यक्तिगत सुख-दु:ख की अपेक्षा अपने से अन्य के सुख-दुख की अनुभूति ने ही नए कवियों के भावप्रवण और कल्पनाशील हृदयों को स्वच्छंदतावाद की ओर प्रवृत्त किया। रूढ़ियों से मुक्ति का प्रयास

छायावादी काव्य ने परंपरागत मान्यताओं को ठुकराकर मुक्त जीवन जीने की नयी राह बनायी। उनकी भाषा, उनका शिल्प, उनके विषय सभी कुछ मौलिक हैं। 'तोड़ो-तोड़ो-तोड़ो कारा' कहकर निराला इस स्वच्छन्द धारा की राह प्रशस्त करते हैं। पंत 'जीर्ण पत्रों के झरने' का संदेश लाते हैं। कुप्रथाओं व सड़ी-गली मान्यताओं को अपने नव उत्साह द्वारा तोड़कर एक ओर कर नयी राह पर चलना चाहते हैं और चलते हैं।

4 / NEERAJ : छायावाद

प्राकृतिक स्पंदन

छायावादी कवियों की रचनाएँ पारंपरिक भारतीय रचनाओं (कालिदास, जयदेव, विद्यापति, तुलसीदास, सूरदास) से इस बात में ऊपरी तौर पर भिन्न दिखती हैं कि उनमें प्रकृति चित्रण अपने आप में ध्येय नहीं होता, अपितु मानवीय भावनाओं से पूर्ण होता है। छायावादी रचनाओं में प्राकृतिक चित्रों के माध्यम से मानवी भावनाओं और अनुभूतियों के जगत् को समझने का प्रयास प्रमुख विशेषता बनकर उभरता है। वास्तव में छायावाद ऊपर से जितना नया और मौलिक दिखता है, उससे कहीं अधिक इसके भीतर आधुनिकता और परम्परा के बीच के भारतीय द्वंद्व एवं संश्लेषण का युगीन अभिव्यक्ति है। इसमें परम्परा का पुनर्नवीनीकरण ही हुआ। निराला पर रामकृष्ण परमहंस एवं विवेकानंद का प्रभाव था। प्रसाद काश्मीर शैवागम और अभिनवगुप्त से प्रभावित थे। पंत पर अरविन्दो का प्रभाव था। महादेवी वर्मा पर मीराबाई का प्रभाव था। प्रेमचंद पर महात्मा गांधी और दयानंद सरस्वती का प्रभाव था। दुर्भाग्य से अब तक छायावाद के विश्लेषण पर मार्क्सवादी आलोचकों ने ही व्यवस्थित काम किया है। इन लोगों ने छायावादी रचनाकारों की पारम्परिक चिन्तनधारा को अनदेखा करने का काम किया है। वागीश शुक्ल ने निराला पर नई दृष्टि से चिन्तन किया है। रामस्वरूप चतुर्वेदी की आलोचना में भी कुछ नयापन है। परंतु आधुनिक काल के भारतीय चिन्तकों-रामकृष्ण, विवेकानन्द, महात्मा गांधी, अरविन्दो या इनके पूर्व के आचार्यों-शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, अभिनवगुप्त, गोरखनाथ, कबीर आदि की चिन्तन धारा के आलोक में छायावादी कवियों एवं लेखकों का व्यवस्थित मूल्यांकन होना अभी बाकी है।

गीतात्मक मधुर वेदना

छायावादी युग की कविता का सृजन अधिकतर मधुर वेदना से परिपूर्ण गीतों के रूप में हुआ। पहले कवि की बात आती है तो इस युग का कवि कहता है–

"वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान।"

और 'अनजान' कविता चुपचाप आँखों से बह निकली होगी अर्थात् मानव मन की, हृदय की गहन अनुभूतियों को अनुभव कर इस युग का कवि काव्य सृजन के क्षेत्र में उतरा। उसकी अभिव्यक्ति मात्र सुन्दर शब्दों की कविता नहीं अपितु हृदय की मधुर वेदना का गान है, जिससे वह सुख-दु:ख का अनुभव करता है। इन्हीं गहन भाव-विचारों की अभिव्यक्ति के चलते महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' कहा गया। वे विरह की मधुर वेदना को संजोकर रखना चाहती हैं, क्योंकि उन्हें इस मधुर-वेदना में भी सुख की अनुभूति मिलती है और वे उस सीमा के पार पहुँच जाती हैं, जहाँ सुख-दु:ख में कोई अंतर नहीं रह जाता। ब्रह्म और जीव की द्वैतता समाप्त हो जाती है– "दमकी दिंगत के अधरों पर स्मित की रेखा-सी क्षितिज कोर आ गए एक क्षण में समीप आलोक तिमिर के दूर कोर घुल गया अश्रु में अरूण हास हो गई हार में जय विलीन!" 'जीवन संघर्ष' महादेवी जी को प्रिय है, क्योंकि इसी से 'सत्य' का बोध होता है। 'ब्रह्म' की अनुभूति होती है और वे इस 'सत्य' व 'अनुभूति' का अनुभव सभी को करवा देना चाहती हैं– "विरह का युग आज दीखा, मिलनी के लघु पल-सरीखा,

दःख-सुख में कौन तीखा, मैं न जानी औ न सीखा।

मधुर मुझको हो गये सब मधुर प्रिय की भावना लें।"

प्रसाद और पंत के सृजन में भी वेदना की इस अनुभूति के दर्शन सहज ही होते हैं। 'प्रसाद' को 'प्रिया' की उपेक्षा गंभीर वेदना देती है। उन्हें उसका वियोग खलता है। इसी विरह वेदना में वे गा उठते हैं—

"कब तक और अकेले? कह दो हे मेरे जीवन बोलो? किसे सुनाऊँ कथा? कहो मत अपनी निधि न व्यर्थ खोलो!"

पंत भी कांटों भरी राह से गुजरते हैं। भावों को अभिव्यक्त न कर पाने की पीड़ा, आशाओं के अनुरूप सफल न होना, प्रेमिका का कठोर व्यवहार सभी कुछ इसके उत्तरदायी बनते हैं और विरह के अश्रु सागर में कवि को धकेल देते हैं–

> "मेरा पावस ऋतु सा जीवन, मानस सा उमड़ा अपार मन; गहरे, धंधले धुले, सांवले मेघों से मेरे भरे नयन।"

किन्तु जिस प्रकार सोना अग्नि में जलकर और भी निखरता है, उसी प्रकार विरह रूपी अग्नि में जलकर कवि भी जीवन सत्यों को अनुभव करता है और कहता है–

> "बिना दुख के सब सुख निस्सार, बिन आँसू के जीवन भार!

× × × × × आज का दुख, कल का आह्लाद और कल का सुख आज विषाद!"

महाकवि 'निराला' ने भी जीवन की कटुताओं को झेला, जिससे मौलिक उद्भावनाओं का उदय उनके जीवन में हुआ।

नवीन छंदों की उद्भावना कर काव्य सृजन किया। अपनी तरह से वे कविता करते हैं–

> "मेरे प्राणों में आओ! शत-शत शिथिल भावनाओं के डर के तार सजा जाओ!"

इस प्रकार छायावादी कवि हृदय की गहन-गंभीर अनुभतियों को गूँथकर काव्य सृजन करता है, जिससे मधुर वेदनात्मक गीत स्वयं ही फूट पड़ते हैं। इन गीतों में मात्र विरह की तपिश ही नहीं अपितु उसकी तपिश में तपकर चमकते हुए जीवन-दर्शन के अद्भुत विचार भी हैं, जो मानव को मानवता का संदेश देते हैं।